

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. २८६१
क

Title जीत-गोविन्द काव्य
(हिन्दी-संस्कृत)

Author जयदेव : राग-संस्कृत

Age

Subject काव्य

No ६१२६ पत्र
८४०

७०७

रा-रा
स-

नी रामकली जाल । सवैया । पाइपै स
नसार करै पलका परपाय दियो भयभीने । सो
यगई कहि केशव कैसेहूँ कोरही कोरक सौह
न कीने । साहसकै सवसौ सवच्छे छिनमे
हरि माति सवै सवलीने । एक उसासही
के उससे सिगोई संगेथ विदा करि दीने ।

रागिनी रासकली ताल सवेया मोहिबो मो
नकी रातिको रातिही पढ्यो वैत कह्यौ पढ़े
गी । ओप उरो जनकी अपजे दिन कहि मढ़े भेगि
या न मढ़ेगी । नैननकी राति गरु चला चल के
शवदास अकास चढ़ेगी । माई कह्यो यह माय
गी दीपतिजौ दिनहै इहि भाति बढ़ेगी । रागि

रा-रा
से

रागिनी रामकली ताल सवैया बोली न सैवे
बलाय रहे हरि पायपरे अरु डो लिये डोरी । के
सव भेटि वेको भरि अंक छुड़ाउ रहे जकमै नहि
छोरी । सूर्ये चित्त वेकौ केतो कियो सिर चापि उ
दाय अंगदति होरी । मै भरि चित न ऊन चित्यौ न र
ही राहि नैनति लाजति गोरी । रागिनी रामकली ताल

रागिनीरामकली ताल सवैया थनभूथरि
लोचन लोलसोमेलि सुकोड कटाक्षकी कोरक
छो । सख माथरिवानी वसी चतराईयो केश मोह
न नास पछी । ऊच तेहू तेनै तन लाज विराजति
वार गहे चहे ओरमछी । नवछी इति बालहिं
बालकता इति अंग अनेरा की फौज चछी ॥

रा रा
स

सवैया । आजमै देखी है गोपसनाइ कहोयन अ
सो असीरकी जाई । देखत ही रहिये इति देखकी
देखते औरन देखी सहसई । एकही बेक विलोक
ति ऊपर वारो विलोकि विलोकति काई केसव
दास कलानिय वरु हूजिय काम किमैरो क
हाई । रागिनी रागकली ताल सवैया-

सवैया । वौलै न बाल बुलावत रहे न परेष लिखै
भुव प्रेम परेषौ । आपन हाथ विलोकि विलो
कि कही तव केसव बुहि वसेषौ । छोटी बड़ी
विधि रेष लिखी जरा आशु को रेष सब कौन जले
षौ । प्रेम ते बोल सस्यो न पश्यो प्रकलाय कस्यो
पिय कैसी है देखौ । रागिनी राम कली ताल ।

रा-रा
स-

हैगति मेद मनोरु केसव आनेद केद हिये उलहे
हैं। भौह विल्याति कोमल हासति अंग सवास
निगाछे गहैहैं। वेक विलोकनिको अविलो।
कि समारुहै नेद ऊमार रहेहैं। एई तो कामके
वान कशावत फूलन के विधि भूलि कहैहैं। रा
गिनी राम कली ताल सवेया तोरिन गायव

कान्ह भले जूभली समुजईहैं मोहि समुझको
जौ उमयोहो । केशव आपनो मानिक सो मन
राय पयाय दै कौनै लयोहो । नैनन हो मिलवो
करियै अब वैनन को मिलिवो नो रयोहो । जाउ
कयो तम जै सो सखी सझ अहो गुणालमै अयो क
ह्योहो । रागिनी राम कली ताल सवैया

रा-रा-
से दि आगे कै केश आपदि आसन दीनौ । आपदि पा
इ पषारि भलै जल पान कौ भाजन लाइन वी
नौ । वीरा बनाइ कै आगे थरे जव वै शरीर कौ कर
वीजन लीनौ । वारे गरी शरीर ऐसे कह्यो हसि
मैतो शनो अपराध न कीनौ । रागिनी राम कली
ताल सवैया चितवौ चित्त बोए हसा ऐ

जावत नावत वार अनेक सिंगार बनायो । जीह
मै आनको आनिवो क्योपै तेरो नऊन भयो म
न भायो । भावै सुने करिवो करि भासिति भाग
वडेव सनै करि पायो । कान्हो सथे जवाहति
नाही सचाहति है अव पाइ लगायो । रागिनी रा
म कली नाल सवेया आवत देखिलिये उ

रा-रा-
क- जू देखो सवै हित बात सवौ जू सनी सवरी हैं य
ह नौ कछु और वहे सवरी अव सौह करौ वकरी
जतरी हैं । समजार कहौ समझी सव के सव
रुही सवै हम सौ जकरी हैं । मान कियो अपमा
न करौ तो हसो अव के हसिके को रही है । रागि
नी राम कली ता- सवैया वैदी सपीन की

हमै हो बुला एतै बोलौ रहै नित मोनै । मोह
अनेकनि आवइ अंक करौ रतिकौ प्रति रैन की
गौनै । बवाएतै पाऊ वस्याइ विरीजन आईहो के
शव आजही गौनै । मोहन के मनको मोहनी
सकहौ यह थो सिष इसिष कौनै । रागिनी रा
मकली ताल । मवेया । हित के इत देषइ

रा-रा-
स-
उपरी । एकचित्तै मसकाय उतै उत वात कहै
वड भायपरी । चारुचकोर विलोचन भासि व
जे दिसतै अंगरी पमरी । सखि आजगई होनी गो
कल हौं सबही मिलि हैजको चोदकरी । रागि
नी रामकली ना- संवेया हौं सब पाइ सिपाइ
रही सिष सीषे नए सिष नैहू सिपाई । मैवहुनै अष

सोभे सभा सवरी के सनै नन माऊ वैसे । वृजे ते वा
न वस्याय कहै मनरी मन केशव दास हूँ । बेल
तिरै इत बेल उतै पिय चित पिलावति यों विलसै
कोई जानै नरी दृगदौरिक वै कितकै हरि ओषिन
छै निकसै । रागिनी राम कली ताल सवेया
केशव राय की सौंर कै कै कछू एकन आप्रमै हो

रा-रा
सं
बोल हसौं हैं । देवदूथौ इक बार सकोचन आर
स लोचन आरसी सौ हैं । आपन वैसेही साजसौ
आज सभूलि गई पिय काल्हिकी सौ हैं । रागि
नीराम कली ताल सवैया वैदिकनी हजना
रिनमै वनिश्री हषभान ऊमारि सभागी । घेलति
ही सखि चौपर चारि भई नहि बिल षरी अनुरागी

पाइसी देखोपै केशव केहे कटेवन जाई । देउदिये
वित साथनिहे संग छूटत कौं बलकी बलताई ।
देखउ दैमधकीपट कोटि मिटै नचटै विषकी विष
ताई । रागिनी रासकली ताल सवैया केश
व औरनसौ रसरासि रसो रस वाड सवै हमसौहैं ।
हैं मन मैलेन जो लोकछु अब छाड्डु वो लिबो

रा-रा
स-

है मरा आय गये कियौ आवेहिरो सजनी सुख
दाई । आयन नेद कुमार सवा सवकौन विचार
अवेर लगार्इ । रागिनी राम कली ताल सवेया
केशव जीवन जो वृज को निज जीव झेते अति वा
पहि भावै । जापर देव अदेव कुमार नि वारत माई
नवार लगार्वै । ताहरि पैं नूरा वारि की वेदी मरु

पीछेते केसव बोलि उदे सति कै चित चान रि आन
रि जागी । जानिन काऊ कवै हरि के हर मारग
ही सरसी दग लागी । रागिनी राम कली ता
सवैया । सधी भूलि गई भूल प कियौ काह कि
भूलेई डोलत वादन पाई । भीत भये कियौ केश
व काहू सो भेट भई कोऊ भामति भाई । आवत

रा.रा. सं. केज विराजति गोप दधु कमला जल केज ऊटी
महसोई । रागिनी रास कली ताल सवैया पं
य एरेहते प्रीतम तौ कहिके शवके हनमै दयादी
नी । तेरी सखी सिष सीपीन एकहे रोषझकी सिष
सीषिजलीनी । चंदन चंद सरोज समीर जौ अवदेह
भरे सखसीनी । मैउलटी जकरी विधि मोकड़ न्यायन

वर पाय ऊँवाय दिषावै । हौं तो वची अत शसति
हे अैसे और जदेपै तो ऊतर आवै । रागिनी राम क
ली ताल सवैया भाषति है सष्वेन सषीन सौं ला
षहिये अभि लाषनियो है । कोमल शसति नैन वि
लासति अंग सवासति कोमन मो है । मूरति वे
न किथौं तलसी तलसी वनमै रति मूरति को है

रा-रा-
स-

काहूके प्रेम पगीहैं । रागिनी रामकली ता-
सवैया केशव कैसेहैं एख प्रण मिल्यो मनभा-
वतो भाग भयोरी । जानैको मारि कहा भयो कैौ
हेजो औथीको आयु ऊयो सटह्योरी । ताकड
तून अजौ हसिबोलै जरु मेरो मोहन पाय प
ह्योरी । काढहूँ इह तेरो कठोर इहे विर

हैं उलटी विधि कीनी । रागिनी रामकली ता
सवेया आज कछु अखियो हरी औरसी मानो
महावर मोहि रेगीहैं । मोहन मोहि सी लागत
मोहि उतेपर मोहन मोहि लगीहैं । मेरी सौ
मोहसौ मानऊ बेगि हिये रस रोसकी रीति ज
गीहैं ॥ मेरे वियोगके तेज तवी कियौ केशव

रा रा
स

हैं। रागिनी रासकलीताल सवैया हलमे
हल सवास कवाससी भाकसीसे भये भौनस
भागे। केशव वाग महे वनसों जरसी चढीजो
नह सवै अंगदयो। नेह लग्यो उरना हरसों निस
नाह चरी ककहे अनरागे। गारि सो गीत विरी
सिससी सिगोरे सिगार अंगार सोलागे। रा-रास-

होनल हून जह्योरी । रागिनी रामकली ता-
सवैया औधिदै आय उसो उनसो यह भोजन
कै अवही हम अहैं । ताकहुनो अवलो वहराशे
राषी वर्याइ मरु करि महे । बैठकहा इनकी फि
राके शव जाहुनही कोऊ जाय जकैहैं । जानत
हैं उन आषितिते अस ओउमरो वहुह्यो अनिर

रा.रा.
स.

मली जाल सवैया गोप वडे वडे वेहे अथाइति
केशव कार सभा अवगाही। विलत बालक जा
ल गलीनमे बाल विलोकि विकाही। आवत जा
तिलगाई चहेदिस चंचरमे पहिचानत काही। वे
दमो आनन काफि कहे चली सृजन है ककुनो
ही किनाही। रागिनी राम कली ना सवैया

नाल सवैया लाडिली लीलिक लोरि ल
री कहे लाल लके कहे अंगि लगायके । आज
तो केशव के सहै लैरुपे लागन देतिन देख
आयके । वेराचलौ उदि आई लिवावन दौरि
केली एही अऊलायके । भूलेहूँ गोकुल गाउमै
गोविंद कीजै गुरुन गाउ चरायके । रागिनी रा

रा-रा-
स-

नही वितयो इह कान्हू कियो लविलालच केतो-
झझाके झरिबहे प्रति केशव पाय परेतो परेई
रहेतो । हौं तो यहै तबही की विचारति होतो उ
मान कौं याही तो एतो । लामा लहैं घन पात
रि देह जनै कवरी विथी ओंघें न देतो ॥ इति
रागिनी रासकली नाइका नाइक समाप्तम् ॥

होत कदा अवके समुके समुकेन तवै जबहे स
मजाए । एकहि देक विलोकनि माहि अनेक अ
मोल विवेक विकाए । जान पयो नजना वझू
जनमावधि लौउहि जातिहो पाए । वात वनाय
वनाय कदा कहौ लेइ मनाय मनाय जौ आए ।
रागिनी राम कली नाल सवैया । भूलेहे सुखे

ग-रा
क- सो दास रूपकीसी माला प्रेमकीसी माला आज
लौ न देवी सति जैसी आज दीसी है ॥ रागिनी
रामकली ताल कवित चंचलनहूँ नश्य
प्रचरा नखूँ जै राय सोवे नैऊ सारिकाऊँ सकतो
सवायोजू । मंदकरोँ दीपडति चंद मुख देखि य
न दौरिकै उगई आऊँ हारतै दिषायोजू । मयाज

शांतिनी रामकली ताल कवित्त सकता
मनित की है मक्त उरीसी नाक दोत दाखों द
मनी हसनी वनी सी है । मोहन के मेहन के अष
रोन की सी रेष भुजुटी खेवष भाव भेट कवि
की सी है । वित वन राई उज की सी उज के से
अरु ऊच सकुचौ तो नैन जैसे उज की सी है । के

रा-रा
कौ नौ देखतिहैं उंस कच्छुद्धनो नही प्रवहूँते देखि
यत उर उदनयोहै । रहसि खिलन गई नोते जे
व भारी भई कियोयाते वाज भयो महावर द
योहै । ओषनकी मेरी फाटतसी आवतहै जा
नतहैं रीठ लागि केशो जोकिगयोहै । रागि
नी रामकली नाल कविन सबदैसषीन

मगल बाल बाहिरै विगारि देखै भाषो तमै केशव
समोह मन भायो जू । कल के निवास ऐसे व
चन विलास सति सैश तो हरति हे ते स्याम स
ष पायो जू ॥ रागिनी राम कली ताल कवि
त । अत उत चाहि देखो जव कोऊ छिगनाहि
वार वार जिय कहो हिये कहा भयो है । अत लो

राधा
की


एसा मै कौन रस है रागिनी राम कली नाल ।
कवित । चंद कैसे भाग भाल मज्ज दी कमान
की सी मन कैसे पने सर नैनन विलास है । ना
सिका सरोज गंध वाह से सरोध वाह दास्यो से
दसन के सो वी जरी सो रास है । भाई की सी गीत
भजनान सो उदर और पंकज से पाइ गति हेस की

वीच दैके सौहै पाय के पवाय कच्छु खाइ वरकीनी
वस वसहै । कोमल मलकासी मलकाकी मा
लकासी बालिका जइसी मीदि मानस किपसहै ।
जानैको विभातु भयो केशव सनै कोवात देखौ
शानि गात जात भयो कियौ असहै । विजसी ज
राषी यह विजनी विचित्र गति कहौ यौ रसिक न

रा-रा विवौ । बोलनि हसति मउ चातरी चलति चारु
को पल पल प्रति पति वत प्रति पारिवौ । केशोदास
सविलास करउ कअरि राये इहि विधि सोरह सि
गारिवौ । रागिनी रास कली ताल कविन
केशोदास सविलास मंदहास जन अवलोकनि
अलापनि कौ आनेउ अणारहै । बहिरति सान अरु

सी जास है । देखी है गुणाल एक गोपिका से देवता
सी सोने से सरीर सब सोये कीसी वास है । रागि
नी राम कली ताल कवित प्रथम सकल स
वि मजन प्रमल वास जावक सदेस केस पास
को सधारि वौ । अंग राग भूषण विविध मेष
वास राग कज्जल कलित लोल लोचन निश

श-श-
क- बल बल वीर कौसौ मात कौसौ सब मझे सो
हि मन भायो है । यल सौ अचल सील अतल से
चल चित जल से अमल तेज तेज कौसौ गायो है
के सो दास वसत अकास के प्रकास चोष चर चर
बट बट चेरु चनौ छायो है । रति की सी रति ना
थ रूप रति नाथ कौसौ कहौ के सो राइ फूट



श्रेतरति सात प्रतिरति विपरी तिनिकों विविधि
विचारुहै । कूटिजाति लाज जहो भूषन सदेस
केस दूटिजात शर सब मिरत सिंघारुहै । कूजि
कूजि उदै रति कूजि तति खन घरा सोई नौस
रति सधि औरु विवहारुहै । राशिनी रामक
ली ताल कवित । तात कोसो गात सब

स-श
क ति देवता बषानी है । ऐसी बातें कौन जनमा
नी सति मेरी सती उनके तो तेरी बानी वेदकी
सी बानी है । रागिनी राम कली ता-४ कवित
कैथौ गदह काज कैथौ कूट्योन सष समाज कै
थौ कछु आज बत वास विधातै । दीनोतै न
सोय किथौ काहु सो भयो विरोध उपज्यो प्रबोध

कौन परि पायो है ॥ रागिनी राम कली ता
कवित । चोली को सो पान तोहि करत सेवा
रि वोई दर्पन ज्यों तोही मोऊ मूरती समनी है ।
तेरे मनोरथ भरी रथ रथ पीछे पीछे डोलत
गुणाल मेरो गंगा को सो पानी है । तेही निय
देवता पै पायो पति केशो सर पतिनी बद्धत प

रा-रा की । केशोदास नामे उरी दीपकी सिपासी दौरी
के उरावति नीलवास उति अंग अंगकी । पौनपा
ति पेछीपशू वासमे सवद सति जित तित वौ
कि वौकि चाहै चोप संगकी । नंदलाल आराम
विलोकै कुंज जाल वाल लीनी गति तरि का
ल पिंजर पतंगकी । रागिनी रामकली ता-

कियौ उर प्रव दानैतै । साव मैत देह कियौ मोह
सौ कण्ठ नेह कियौ देखि मेह अति उर प्रथियानैतै ।
कियौ मेरी प्रीत की प्रतीत लेत केशो रात्र अजह
न आय मन सथौ कौनै वातैतै । राशिनी राम
कली ताल कवित चंदन बिट वष कोमल
विमल दल ललित वलित लता लपटी लवेरा

रा-रा-
क मायो न मनायो मन भ्रैसी तोहि हृदि पज्ज पी
छे पछितात है । रागिनी रास कली ताल ।
कवित आषन ज्यौ सूरज न काननतौ सनि
यत जैसे केशो राइ तम लोग न भै गाये सौं । वे
सकी विसारे सथी काक ज्यौ वनत फिरि जूहे
सीदे सीत पात ईद सीद दाय सौं । हरि हरि करत ही

कवि । बार बार बोली जव बोलीन विहसि
तव बालक ज्यों बोलि वेको कत विललात हैं ।
ज्यों ज्यों प्ये पायन त्यों पाहन तै पीन भयो होत
करा किये अब माघनसो गात हैं । केशोदास
सब छाई कीनो इहरे सो होत तोरू छाडि जिय
जिये विन करा जात हैं । ऐसे प्यारे पियरे को

रा-रा
के
प्रतिफल माल तो रिझारी वीरा वया राइके । लैलै
दीह मास तजि विविध विलास हास के सो दास
है उदास चली अकलाइके । सेइके संकेत सुनो
कान्हू जसो बोली ऊनो मोसो जोरे कर हनो हनो
उष पाइके । रागिनी राम कली ताल कवित
लीने हम मोल अनबोली आई जायो मोह मोहि

दौरि दौरि गहो पाय जो नौत क होर होर जानि जि
य पायेहो । काको चर चालवे को वसे कहो वन
साम रहेहो जौ वसन प्रात मेरे चर आयेहो । राशि
नी राम कली ताल कवित । देखति उदधि जा
न देखि देखि निज गात चपकके पात कछू लिखो
हे वनाइके । सकल संगंध फारि हरि काको मारि

रा-रा कवि नैननकी अतवाई वैतनकी चतवाई गा
की तकी अवाई नडरति इति चालकी । अपने चरित्र
निके चित्रत वचित्र चित्र चित्रनी ज्यों सोहै साय प्रवि
काय अलकी । चंदके समाचार वाय सो चली फि
रति करके तिसारे मरानैनन की पालकी ॥
की जैये पान प्राण पारे आई है जू आई अलवेति

चन म्याम चन मात्वा बोलि लाई है । देखो है है उष
जहो देख ऊन देखी परै देखी कैसे बाट के शोदास
नी दिखाई है । ऊचे नीचे बीच कीच के ठकनि पीर
पर माहस गये दमति अति सुषदाई है । भारी य
हकारी निमि निपट अकेली तम नारी प्राण ना
य साय प्रेम जस हाई है । रागिनी गम कली ता

श-श
की

मेदज्यौ । निमर वियोरा भूले लोचन वकोर रु
ले आई वज्र वेद चेद वलि चलि वेदज्यौ । रागि
नी रामकली ताल कवित उरजत उरग
चपत फति चरनन देषति विविध निशिचर दि
स चारके । गत तिन लगत मसलथार सुनति
न फिली गन घोष निरघोष जलथारके । जा

खालि कलकी । रागिनी राम कली ताल ।
कवित । चंदन चण्डा इचारु अंबर के उर हार स
मन सिंघार सोहैं आने दके कंद ज्यों । वारो कोरि
रति नाथ वाना मै वजाय गाय म्याज मयाल
साय वानी जग वेद ज्यों । चौकि चौकि चकई सी
सोति निकी हूती चली सोते भई दीन अविद उति

रा-रा
के

क आनि नीकेरेको लागात है सीताज को हत गी
त कैसे उर आनिये । आविन जो देखियत सोई
सोची केशोदास कानन की सुनी सोची कवड़े
नमानिये । गो गल की जलदा प्यौरी उलटा
वति है आज लौनो वेसे हैं कालि की न जानिये
इति रागिनी राम कली कविने समाने शुभम

वज्रित भूषण गिरत पट फटतन कटक अटक
उर उरज उजारके । प्रेतन की हूँ नारि कौन पे
नै सीछो यह जोग कोसो सार अभिसार अभि सा
र अभिसारके । रागिनी राम कली नाल कवि
न । हरि से हित सो भ्रम भूलि हन कीजे मन हो
नो करि हिय हनै होत हित जानीये । लोक में प्रलो

रा-वे चन विलता वतरे । उथोजे पद सेवत वीते कल्प
जग सो कवजा उरला वतरे । ज्यो सख ब्रह्मलो
क मै नाही सो कवरी सख पावतरे । सगरे ब्रज
को राज दीयो है हमे लावि जोरा पदा वतरे ॥
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । हरि सख सो
रती रलीयो तव ते भवन नही भावतरे । गावै शु

रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । सोवराजी
होसै जायो थारो जान । रतमानी परभातरी
आया रूढो करो छोटवान । प्रकट प्रकार
करी छेक जरा पीकलोक प्रथमत । इनमें
रूढ नहै तिल जीकाई रेगीला प्रीतमरी आन
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । कवनव

रा-वे मन राम कल राम कल थावरे सोई । महा जय
करे वेहरि प्रसन्न होवेंगे । मन बच कम सो
याद करे ज्ञान करे भव पार परोरे । प्यारे क
रुणा सागर तिन पालो सब से सारे पेसे मथ
सूदन मयारे । रागिनी बंगाली दुमरी ता । ३ ।
मोरी गली पाय फेर जो हो मोरी रा- । ह्यो यो

दरमैकरे थाकी सोवस कवहुन आवतरे ॥ रा
गिनी बेगाली दुमरी ताल ॥ ३ ॥ तेरीगत अणरेण
२ ॥ अतप्रचेउ जिनरव्योहैब्रह्मंड अदजोतिनिरेज
न निराकार ॥ जाकौकोउतपायोपाररे ॥ निरा
मगावै पारनपावैब्रह्मा सख उचरे ॥ थ्यानथरेजा
को पेचानन श्रीपत जश अत अमैभक्त दातार ॥

रावे ली दुमरी ताल ॥ ३ ॥ कारीरे वदरीया राम कैसी ड
मड आई । सोवत कीरित आई पीया मिले वन थाई
अरे वहे परवै आसन भावन विना सुना मेदि वा
हो राम कैसी ॥ रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल तितारा ॥ ३ ॥ उमगौ उमगौ आवै गोरी
या जीया रहमारहो ॥ कहा कहे कछु वसन

बढ़कर आप मोरे बालमलोक जाने प्रमयावहे
रागिनी बेगाली दुमरी ताल । ३ । नई लगन ह
म जानीरे । जो तम रसीयो बोली बोलौ तम रहे
ते नारस योनी हो । रागिनी बेगाली दुमरी ता
ल । ३ । मैं गवनै नही जई हे राम । जो गवने की वा
न चलै है ता पर टोना चलै हे राम । रागिनी बेगा

ग.वे

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वभूतहितं कुरु ॥

ह्रीं मेरो तन कारो मन पीय राह माय हो ॥ क
स्नानन्द रुकत नही रोके मोही लीयो हेमही
य राह माय हो ॥ इति रागिनी बेगाली हु
मरी ताल तितारा समाप्तम् ॥ ॥

रा-वे टणाल ॥३॥ सयाने वेलियावे हरनया वसंदे
लोक विगाने । मित्र करदि वारि वे पैया ना
पउदी वेमियो खकरेन सिमुदे आवो नैयनादे-
रागिनी बेगाली टणाल ॥३॥ केस जाउरा
कीता वेदिलन कदर ना जाने दर कदर मियो ।
वेषन न सुसाक जि मेरा इस्क लगामत लीता

रागिनी बेगाली टण ताल ॥ ३ ॥ नोडे वेखन दि
नोग मेव । चढवेषो वारिवे राजन नू हरो वेसो
णार वस नले साडी चोगा ॥ रागिनी बेगाली ट
ण ताल ॥ ३ ॥ आया निस भाल वोरो जनयार
किङ्कयो ते नूयार । हीरति मानि नू कि प्रकटा
पीरू दिल दिङ्कई ओसार । रागिनी बेगाली

रावे चोत शोरि मियो सोई गानि मत ईमान प्यायेदा ।
राशिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥ कि जालमा
दिवे मियो योकि सदी यारी दले विसड्डे ना
लन जाने नामन जाने की करवे । माववेवो
नेअ सोवरो योमे दियाने जिंदरी दिवानी मैदा
जिंदरे । राशिनी बेगाली टपा ताल ॥ ३ ॥

दिलतू ॥ रागिनी बेगाली टण ताल ॥ ३१ चल उ
ढकर दीदन याग मियो । दीदन यागेद आमदा
जोदामियो । वाग बहारो निवे वेधन चलिण हो
मियो मैडा दिल परदा वजार मियो । रागिनी बे
गाली टण ताल ॥ ३१ देवणा दिदार जागेद प
रावले परावायले छ मियो । खोटा खारा पय

रा-वे- मार चला कौं छोड़ि चलावे मज नृ इस्क गरी
वो कौं मियो । ईया खदा यद सन मेरी दाहेफि
र याद सो मेरी मियो । रागिनी बगाली टपा
ताल । ३ । बिडनदा परवे लावे भला मियो वे
सान् चाक चाक जवावो भोदा कोईवे । ओदा
नियोदा साडे चरवे शोरी लगि सहवत पाक

जाइउक मालकी जाये । इस्क लगा में श जीत
र सोदाके हाहाल जिगार परवी जावे । शगिनी
वेगाली टणा ताल ॥ ३ ॥ कौन गत भई मोरी आ
नना मिलें पिया मोकों । उन बिन कलन प
र न प लच्छन के सैरेण विशाय आन मिलें पि
या मोकों । शगिनी वेगाली टणा ताल ॥ ३ ॥

रा.वे. सवि आली मेरे प्यारे तू रात किसे वे सारिओ ॥
आप छे उजादे वारी नाल सही ले सफे उ थके
दी मैं सारिओ । रागिनी बेगाली टपा ताल । ३ ।
कोता वे करे जा सारदा पारदा गम खावा ॥
की प्रछे दे वारी आ जय दिल वे करारदा हौ तो या
रियो दे नाल गुजारदा । रागिनी बेगाली टपा

रागिनी बंगाली टणा ताल १३। होवे फोला म
न पर चोदियो। ओष लउंदिम मा क मोदि चि
न च छयो दियो होवे फोला मे। रागिनी बंगा
ली टणा ताल १३। जिद मोदिया रोदे ताल ल
गि वे। अदा रेग ने जद मै पावो गारे लगावो बिन
डिटे ओ मै दगी। रागिनी बंगाली टणा ताल १३

रा.वे नी बेगाली टपा ताल।३। पलक दो आऊ मे
रा साई। जो चाहे जरा राज कर वोई कर सभ
ऊ दरत उसि ताई। रागिनी बेगाली टपा ता
ल।३। भई लोडे वो मरी बिन देखिने कना स
हाय। जब ते रासन कीनो विदेश वा भवन भा
वे ककुनहिंचा। रागिनी बेगाली टपा ता।३।

ताल।३। तोरिनगरिआमैं नारहोंगि तेतो अ
नत करारस भोगा । सदादेगारसरेग करारै ह
मको दीनी वद्धत विरोग । रागिनी बेगालीट
पाताल।३। आज तोरन गाजै आये पियारवा
वरमेरे । अंग सेंगरेग लागै प्रचट डरावत गा
न छिनल विपल ऊप कत आप डेरै । रागि

रा.वे वैगानि साय साय सानी था पम गरे ॥ इति
रागिनी वेगाली टपा समाप्तम् ॥

मग मथ मेरे मगरे थाति सामरे सानी । पग मे
थरे थरे पगथ म थामरे सासरे सानी । सादेगा
ममे सगरे मगमे थाम थाम पेप थानी । साथ
साथ पगथरे सदारेग मोरी एकत सानी ॥
रागिनी बेगाली टपा तिनारा ॥ ३ ॥ पग
मथरि साति परे मपग थरेरे । गी समाथ हो

रावे धुको रसमेजरीमै प्रेकुत जो वना कही है ॥ रा
गिती बेगाली सवैया ताल ॥ १ ॥ यन मूथ
रि लोचन लोल सो मेलि सकों ड कटाक्ष की
कोर कछी । माव माधुरि वानी बसी चतरा
इयो केश मोहन नास पछी । कुच तेहू नैनै
नन लाज विराजति वार गहरे बड़े डोर मछी

गगिनी बेगाली सदैये ताल।३। मोहिबो मोह
नकी गतिको गतिही पयोबन कहा थौ पड़े
गी। ओप उयो जनको उपजै दिन कहि मदै अगि
या नमदैगी। नैनन की गति गह चलावल के
शवदास अकास चढ़ैगी। माई कसो यह माय
गी दीपति जौ दिन है इहि भाति वढ़ैगी। नवव

रा.वे. पर सो है । नाहिकरो जिन नागारिह राज राज
दियो तव प्रेऊ स को है । रागिनी बेगाली स
बेया ताल । ३ । पार पैं मनुहार करै पलका प
र पाय दियो भय भीने । सोय गई कहि केशव
कैसे रहे कौर हो कौर क सौहन कीने । साहस कै सु
ष सौं सव छै छिन मै हरि साति सवै सुषलीने

नवछो इति बालहि बालकता इति श्रेया श्र
नेगकी फौज बछो । रागिनी बंगाही सवै
या ताल । ३ । ऊरु उरोजनके परसे रिस भौ
रिचछो नवछो कित कोरे । दैरद वच्छद चे
वनही रस सीति गही उनही मन मोरे । नीवी
की नीवि कुँवे ब्रवि औरसी पेलत पानि पिया

रा.वे सस्योन पश्यो अकलाय कस्यो पिय कैसी है देषी ।
रागिनी बंगाली सवेया ताल । ३ । आज मै देषी
है गोप सता ३ क होयन ऐसी अशीर को जाई ॥
देषत ही रहिये इति देह को देषते और न देषी स
हाई । एक ही बंक विलोकति ऊपर बायें विलो
कि विलोकति काई । के सब दास कलातिथ व

एक उसा सही के उससे सिगरेई संगेय विदा करि
हीने । राशिनी बेगाली सवेया ताल । ३ । बोलै
न वाल बलावत रहे न परेस लिखे भव प्रेम परे
षो । आपन हाथ विलोकि विलोकि कही तव
के सब बहि वसेषो । छोटी बड़ी विधिरेष लिखी
जरा आशू कीरेष सकौन जलेषो । प्रेमते बोल

रा.वे. विंद सो है सो तो चेद सो देखौ । रागिनी बेगाली
सवैया ताल । ३ । कान्ह भले जभली समझाई
हैं सोहि समझ कौ जो उम सो हो । केसव आप
नो मानिक सो मन शय परायें कौ नै लयो हो
नैन न ही मिलवौ करिये अव नैन कौ मिलि
वो नौर हो । जाइ कसौ तम जै सो सषी सऊं ये

रु वृजिय कामकि मेरो कन्दाई । रागिनी बेया
ली सवेया ताल । ३ । ज्यों ज्यों इलास सो केसव
दास विलास निवास हिये अवरेष्यो । त्यों त्यों व
ह्यो उर कंप ककु भुम भीत भयो कि थौं सीत वि
सेष्यो । सदित होत सषी वरही मेरे नैन सरोज
नि सोचके लेष्यो । तैंज कसो सष मोहन को प्ररु

श.वे. केविधिभूलिकहेहैं । रागिनी बंगाली सवै
या ताल । ३ । तोहित पाय वजावत नाचत वा
२ अनेक सिंगार बनायो । जीहूँमे अतकौ
आनिवौ छेड्योपै तेरो तऊत भयो मनभायो ।
भावै सते करिवो करि भामिति भागवडे वस
तैं करि पायो । काहु तौ स्येज वाहति नाही

है गणाल मैं प्रेसो कह्यो हो । रागिनी बंगाली
सवैया ताल । ३ । है गति सेद मनोहर के सब
आनेद के देखिये उलहे हैं । भौह विलानि को म
ल हासनि प्रेग सवासनि गाढे गहे हैं । बेकवि
लोकनि को अविलोकि समाह कै नेद ऊमारु
रहे हैं । परितो काम के वान कहावत फूलन

रा-वे वेत सिंचार समीप सिंचार किये किये सेंद
र नाई । रागिनी बेगाली सवेया ताल । ३ ।
आवत देखिलिये उदि आगे के केश आश्रि
आसन दीनौ । आश्रि पाई पसारि भलै ज
लपान को भाजन लाइन वीनौ । वीरावना
इके आगे थरे जब बेहरि को कर वीजन ली

सुचारति नारी सुचारति है अव पाइ लगायो ।
रागिनी बेगाली सवेया ताल ॥३॥ आज वि
राजत है कहि केसव श्री हृषभान कमारि क
न्याई । वाति विरेचि वहि कस कामरवी सुवि
चारि सुबुद्धि बनाई । अंग विलोकि विलोकि मै
ऐसी को नारि नहि जहि नारि निवाई । मूरति

श-वे ज ही गौनै । मोहन के मत को मोहनी सकहौ
यह सिष ईसिष कौनै । रागिनी बंगाली सवैया
ताल । ३ । हित कै इत देखहु देषो सवै हित वा
त सनौ जसनी सवरी है । यहनौ कहु और
वहै सवरी अव सौह कौ वकरी जतरी हैं । स
सुजाद कहौ समुजी सव के सव कूटी सवै हम

नौ । बाहेगही हरि प्रेमो कस्यो हसि मैतो इतो
अपराध न कीनौ । रागिनी बेगाली सेवेया
ताल । ३ । चित्तवौ चित्त बोपे हसापे हसौ होब
ला ऐतें बोलौ रहौ चित्त मोनै । मोंह अनेक नि
आवहु अंक करौ रति कौ प्रति रैन कीरौ नै । व
वापतें पाहु वस्याइ विरी जन आइहौ केशव आ

रावे की घट कोटि मिटै न चटै विष की विषताई । रा
गिनी बंगाली सवैया नाल । ३ । केशव औरत सौं
रसि रसि रस्यो रसवादु सवै हम सौं हैं । हौं मन मे
लेन जो लो ककु अब ह्या डड्ढ बोलि वो बोल हमौ
हैं । देखइ यौ श्वार सकोचन आर सलोचन आर सी
सौं हैं । आपज वैसे ही साज सौं आज सभूलि गई

सौं जकरी हैं । मान कियो अपमान करौ तोर सो
अव के हसिके कोर ही हैं । रागिनी बंगा ली सवै
या ताल । ३ । हौं खाव पाइ रही सिष सीषे न ए सि
ष तै हूँ सिषाई । मैव झूतै आव पाइ रही देखो पै के
शव के हूँ कटेव न जाई । देख दिये वित साथ तिहूँ
संग कूटत को पलकी पलताई । देख दै मथ

रा-वे- निकसै । रागिनी बंगाली सवैया ताल । ३ । वैढिङ्गनी
वृज नारिन सैवनि श्री वृषभान ऊमारि सभागी । ऐ
लति ही सवि चौपुर चारि भई तहि बिलखी अनरा
गी । पीछे ते के सब बोलि उहे सति के चित चातुरि आ
नरी जागी । जानित काहु कवै हरि के सर मारगारी
सरसी दया लागी । रागिनी बंगाली सवैया समासम

पिय कालि की सौ हैं । रागिनी बेगाली सवैया
ताल । ३ । वैदी सखीन की सौ भे सभा सबही के
स नैनन माऊ बसै । बूझै न वात वस्याय कहै
मनही मन केशव दास हसै । बिलनि है इत धे
ल उतै पिय चित्त बिलावति यौ बिलसै । कोई
जानै नही दृग दारि कवै कित कै हरि ओ बिन छै

श.सो.
गी.

चक्रवर्ती श्रीवासुदेव रति केलि कथा समेत मेतं करो
ति जयदेव कविः प्रबंधं २ यदि हरि सरणि सरसं म
नोपदि विलास कलास ऊत्तरहर्ष । मधुर कोमलकांत
पदावली शृणु तदा जयदेव सरस्वती ३ वाचं पल्ल
व यत्समा पतिथरः संदर्भं सुद्धि गिरं ॥ जानीते
जय देव एव शरणः श्लाघ्यो डरुहडुतेः । शृंगा

अथ टोडी रागिनी गीत गोविंद परिच्छेदमाह ता-
ला ॥ मेवै मे इरमंवरं वतभवः श्यामास्तमालदु-
मे नैकं भीरुरयं त्वमेव तदिमे राथे गृहे प्रापय
इत्येतेदति देशतश्चलितयोः प्रत्यथ केजदुमे राथामा-
थवयो जयति यमना कलेररः केलयः १ वाग्देवता
चरित विवित वितसम्यापस्यावती वराणचारणा

रा. हो.
गी.

चक्रगारिषे केशव धृत कक्ष्य रूप जय जगदेषाहरे २
वसति दशान शिवरे धरणी तवलया शशिनिकलं
क कले वनि मया केशव धृत मकर रूप जय जग दे
श हरे ३ तव कर कमल वरे नाव अद्भुत भृंगे दलित
हिरण्य कशिपु तनु भृंगे केशव धृत नर हरि रूप
जय जग दीशहरे ॥४॥ छल यसि विक

रोन्नर सत्त्वमेय रचने राचार्य गोवर्द्धन स्यङ्गी कोपिनवि
श्रुतः श्रुतिथरो थोयीक विद्वापतिः ॥ अष्टपदी
हीङी रागिनी । ताल । । प्रलय प्रयोधिजले ध
तवानसि वेदं विहित विहित चरित्र सुविदं केश
व धृतमीन शरीर जयजगदेषाहरे । क्षितिरति
विप्रलम्बे तव तिष्ठति दृष्टे थराणा थराणाकिरा

ग. टी.
गी.

यं । केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीशहरे ७ व
हसि वषुषि विशादे वसन्तं जलदामं । हल हतिभी
ति मिलित यमनामं । केशवधृत हलथररूप जय
जगदीशहरे ८ निंदसि यज्ञविधेररुह्य श्रुतिजातं ।
सदय हृदय दर्शित पञ्चज्ञानं । केशव धृत वृथ श
रीर जय जगदीशहरे ९ म्लेच्छति दहनि धने

मणो वलि मङ्गल वामन पदनाब नीर जनित जनपा
वन केशव धृत वामन मन रूप जय जग दीशह
रे ५ त्रिविद्य रुथिर मये जगदय गत पापे । स्नापय
सि पयसि प्रामित भवतापे । केशव धृत भृगुपति
रूप जय जगदीशहरे ६ वितरसि दिक्षरणे दि
गपति कमनीये । दशम्वार मीलि वलि रमणी

रा. टी. गी. ते हलं कलयते कारुण्य मातन्वते । स्नेहान्तरर्षय
ते दशा कृति कृते कृष्णाय नमः ॥ ११ ॥ अष्टपदी ॥
श्रित कमला कुच मंडल धृत कुंडल । कलित ललि
त वनमाल जय जय देवहरे १ दिनमणि मंडल
मंडन भव विडन सति जन मान सहस्र जय जय
देव हरे २ कालिय विषथर गंजन जन रंजन

कलयसिकरवाले । भूमकेतुमिव किमपि कराले केशव
भूत कल्कि शरीर जय जगदीशहरे १ श्रीजयदेव
कवे रिद मदित मदारं । शृणु सखदं सुभटे भवसा
रं । केशव भूत दश विध रूप जय जगदीशहरे ॥
वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोल मदिभ्रते दैत्य दार
यते बलिं हलयते दत्तद्वयं ऊर्वते । पौलस्त्यं जय

ग. हो. संदर धृत संदर श्रीमत्त चंद्रचकोर । जयजयदेव हरे
गी. ७ श्रीजयदेव कवेरिदे करुते सुदे मंगल मज्जलगी
तं । जय जयदेवहरे ८ अष्टपदी । श्लोक । रामो ह्ला
स भरेण विभ्रमभृता साभीरवाम क्रवा मभ्यर्णोपरि
भ्यतिर्भरमरः प्रेमांथया रायया । साधुत्वददने सथास
यमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाड्डवचुवित

य३ कुल कमल दिनेश । जय जय देव हरे ३ मधुसर
नरक विनाशन गरुडसन । सर कुलकेलि निदान
जय जय देव हरे ४ अमल कमल दललोचन भव
लोचन । त्रिभुवन भवन निधान जय जय देव हरे
५ जनक सत्ताकृतभूषण जित दृषण समर शमि
त दशकंद । जयजय देवहरे ६ अभिनवजल थर

रा. दो. मूर्तिमानि वसथौ मग्यो हरिः क्रीडति ८ नित्यात्मंग
गी. वराङ्गजंग कवल क्लेशादिवेशाचलं प्रलेयलवनेच्छ
यान् सरति श्रीवेङ्ग शैलानिलः । किंचस्त्रिग्यरसात्
मौलिमुक्कलान्यालोक्य हर्षो दया । उत्तीलति कुहूः
कुहूरिति कला ताना = पिकानागिरः ॥ १॥ अष्टप
दी ॥ चंदन चर्वित नील कलेवर पीत वसन ।

स्मित मनो हारीहरिः पातवः अनेक नारी परिरेभसे
अम स्फुरत्मतो हारिविलास लालसे मुरारि रामा दु
पदर्श यत्यसौ सखी समते पुनराह राधिका ७ वि
शेषा मनुरंजनेन जनयत्नानंद मिंदीवर श्रीणीश्या
मलकोमलैरुपनयत्नैर्गौरनंगोत्सवं । स्वच्छंदं व्रजसे
दरीभिरभितः प्रत्यंगमालिङ्गितः शृंगारः सखि

श.टी. सरोज ३ कपि कपोल तले मिलितालपिते किमपि
गी. श्रुति मूले । चारु चुचुव नितेववती दयिते पु
लके रत्नकले ४ केलिकला कतकेनच कावि
द मंयमना जलकले । मंजल वंजल कंजगते
विच कर्ष करेण उकले । करतल ताल तरल बल
या बलिकलित कल स्वत वंशी । रास रसे सह

वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल मंडित मंड युगस्मि
तशाली १ हरिहरमग्य वधुनिकरे । विलासिनि वि
लसति केलिपरे १ पीनपयो थरभारभरेण हरि परि
रभ्यसगगं । गोप वधरन गायति काविडदे चित पेच
म गगं १ कपिविलास विलोचन विलन जनित म
नोजं । ध्यायति मग्य वधरथिके मधु सूदन वदन

रा. हो
गी.
निजोत्कर्षा दीर्घा वशेन गतात्यतः क्वचिदपिलता के
जेगुंजन मधुव्रत मेडली सखर शिखरे लीना दीना
पुवावररु = सखी १० केसारिदपि संसार वासना वे
थ श्रवलो राधा माथाय हृदये तत्याज व्रज संद
री ११ इतस्त तस्मा मन सत्यग थिका मनंग वाण
व्रजवित्त मानसः कृतानता

नृत्य परा हरिणा युवती प्रश संसे ६ स्त्रियतिकाम
पि चेंवति कामपि रमयति कामपि रामो पश्यति स
स्मित चारु परा मपरा मनु गच्छति वामो ७ श्रीजय
देव भागात मित मद्भुत केशव केलि बहस्ये । वेंदा
वन विपिने चरितं वितनोत शुभानि यशस्ये । ८ ।
विहरति वनेराथा साधारण प्राणयेहरी विगलित

रा. दो.
गी.

कटिलक्रीडा भरेण शोण पश्य मिवो परि भ्रमता
कुले भ्रमणेनता महे हृदिसंगता मनिशं भृशं रमया
मि किं वनेन संगमिता मिह किंवथा विलयामि ४
तत्त्विवन्त मस्यया हृदयन्तवा कलयामि तत्त्ववे
यि कतो गतासिनते नते ननयामि ५ दृश्यसे पु
रतो गता गत मेव किंविदयामि । किंपरे वश से

यः सकलिते नंदनी तदात्त ऊंने निषसाद माथवः १२

॥ अष्टपदी ॥ मामियं चलित्ता विलोक्य द्वेते वधू

निचयेन । सापराधतया मयानति वारित्ताति भयेन

१ हरिहरि हता दरतया गतासा ऊपितेव । किं क

रिष्यति किं वदिष्यति साचिरं विरहेण कियनेन जने

न किंसम किंसवेन गृहेण २ चिंतयामि तदानने

रा.टो. तस्या एव स्तुती दृष्टो मन सिज प्रैवत्कटाक्षासुग ।
गी. श्रीणी जर्जरितं सता गयिमनो नाद्यायि संपुल्लते
१३ हृदि विलाशता हारीनार्य भुजंगमना यक=
कुवलय दल श्रीणी कंदेन सागरल युति = मल
यज रजो नेदंभस प्रिया रहिते मयि प्रहरतहर
श्रोत्यानेंग कथाकिमथावसि १४ अष्टपदी ।

भ्रमं परिभ्रमं न ददासि । क्षम्यता सपरं कदापि न वे
दशं न करोमि । देहि सुंदरि दर्शने मम मत्सयेन
इतीमि । वर्णितं जयदेव केन हरेरिदं प्रवणेन किं
उ विल्व समुद्र संभव रोहिणी रमणेन ६ पाणौ
मा कुरु हत सायक ममं माचाप मारोपय क्रीडा
निर्मित विश्व मूर्धित जना ज्ञानेन किंपौरुषं ।

रा.लो.
गी.

वसति विपिन वितानेत्यजति ललित थाम । लढ
ति थरणि शयने वङ्ग विपलति तवनाम ४ भाग
ति कविजयदेवे विरहि विलसितेन । मनसिरभस
विभवे हरि रुदयत सकृतेन ५ श्लोक पूर्वयत्रस
मंत्यारति पते रासा दिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेवनि
कंज मन्मथ मन्त्र तीर्थे पुनर्मायवः । आयेरुत्थाम

वहति मलय समीरे मदन मयनिथाय स्फुटति कुरु
मानिकरे विरहि हृदय दलनाय १ सखि सीदति तव
विरहे वन माली । दहति शिशिर मयवे रमण मन
करोति । यतति मदन विशिखे विलपति विकतरो
ति २ धनति मथुय समूहे अवण मयि दधाति । मन
सि वलित विरहे निशि निशि रुजमय याति ३

रा.टो. ग्याहशो विभ्रमास्तद्वज्रौवज्र सौरभं सव सथास्यंदी
गी. गिरं वक्रिमा। साविवाथरमापुरीति विषया संगे
पिचेस्मानसे तस्यालग्न समाधिहेतु विरह व्याधि क
थेवर्तते १ साकृतस्मितमा कुला कुलगलगलमि
ल मलासितं। भ्रुवहली कमलीक दर्शितभुजा मूला
ईदृष्टस्तनं। गोपीनान्निभृतन्निरीत्यगमिताकाक्ष

निशं जयन्त्रपितवै वालाय मंत्रावली भूयसात्कवर्जं
भ निर्भरपरी रेभासते वाञ्छति १ विकरति मुद्रः
श्वासा नाशाः पुरो मङ्गरी दत्ते प्रविशति मुद्रः कुंजे
गुंजे गंजन्मङ्गर्वज्जु ज्ञतास्यति । रचयति मुद्रः शय्या
मर्या कुलङ्गरीदत्ते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रिय
स्तववर्तते ११ तानिस्पर्शं सत्वा नितेव तरला स्त्रि ।

रा-दो- गी- सहचरी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिणी
लन कोमल मलय समीरे । मधुकरनिकरकरंवि
त कोकिल कनित कुंजकुटीरे । विहरति हरि रिह
सरस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य उरंते । उत्तमदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समू

५
शिरं चिंतयन्नेतर्मग्य मनो हरोहरतवः क्लेशत्रवः
केशवः २ यमना तीर वानीर निज्जिमेदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्धान्तं मायवं रायिका सावी । वसंते वा
सेती कसम सज्जमारै रवयवै । अमंती कोतारे व
द्ग विहित क्लृप्तान् शरणं । अमंदं केदर्यज्वरजति
तचिंता कुलतया । वलहाथार्यां सरसमिद मूवे

श.टो. गी. रुण कृतज्ञासे । विरहिति कृतन कृत सखाकृति
केतिकि दंतदिनाशे ५ मायविधा परिमलललि
तेनव मालति यात सुगंधौ । मुनि मनसा मयि ।
मोहन कारणा तरुणा कारणा वंथ ६ स्फुरदति
मुक्त लता परि रंभाण मुकुलित पुलकित चूते
। हंदावन विधिने परि सुर परि गत ।

हनिराकुल वकुल कलाये २ मृगमदसौदमरभसव
शंवद नवदल माल तमाले । युवजव हृदयविदा
राग मनसिज नावरुवि किंसुकजाले । मदनमहरी
पति कनक देउरुवि केसर कुसुम विकामिलित ।
शिली मख पाटल पटल कृतस्मर त्राणविलासे
४ विगलितलंजित जगदवलोकन तरुणक

रा. दो.
गी.

२१ उत्तरीलक्षधुगंधु लव्यमधुपद्याभूत हृतांक
२ क्रीडत्कोकिल काकली कल कलै रुझीर्ण क
र्णज्वराः नीयंते पथिकैः कथं कथ मपि ध्याताव
थानक्षणा शप्त प्राण समा सम गम र मोह्लासैरमी
वासराः २२ इरा लोक स्लोक स्तन कन वकाशो कल
तिका विकाशः कासारो पवन पवनीयं व्यथ ।

यमुना जल पूते । श्रीजयदेवभरिणते सिद्ध सुदयति ह
रि चरण स्मरति सारं । सरस वसंत समय वन वार्ण
न मन्त्रगत मदन विकारं ८ अष्टयदी ॥ दर विद
लित मल्ली बलि चंचल्यराग प्रकटित पट वार्मे
वीसयन्काननानि । इह हि दहति चेत = केतकी
गेथवेधु = प्रसरद समवाण प्राण वज्रं धवाह =

श. हो
गी.

अविरत निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शालं । स्वहृदय मर्म करोति सजल नलिनी द
लजालं २ कुसुम विशिख शरतल्य मनल्य विला
स कला कमनीयं । व्रत मिव तव परि रंभ सखा
य करोति कुसुम शयनीयं ॥ ३ ॥ वहति च गलि
त विलोचन जलधर मानन कमल मदारे । विधु

यति अपि आम्यङ्गेगी रणित दमणीयान मुकुल प्रसू
ति श्रुतानां सखि शिवरिणीये सुखयति । अष्टप
दी ॥ निंदति चंदन मिंद करण मनु विंदति वेदम
थीरे ॥ व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलय ।
ति मलय समीरे ॥ ११ ॥ साथव साविरहे तवदीनाम
नसिज विशिवभया दिव भावनया त्वयिलीना

श-दो वि कल्य भवंत मनीव इरायं । विलपति हसति
गी- विषीदति रोदति चंचति मंचति नायं ॥ श्रीजयदे
व भणित सिद्ध मथिकं यदि मत्तसा नदनीयं । ह्रि
विरहा कुल बलव युवति सखी वचनं पटनीयं ८
अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ आवासे विपिना यते प्रिय सखी
मालापि जालायते ॥ नायोपि असितेन दा

मिव विकट विधुत्तद दन्त दलन गलिता मृत्यारं
४ विलिखति रङ्गसि करंगम देन भवेत्तम समशर
भूते । प्रणमति मकर मथो विनिधाय करेच शारे न
वहते ५ प्रतिपद मिदमयि निगदति माथव तव
चरणे पतिताहं । त्वयि विम्वरे मयि सपदि स्थयानि
थि रयि कुरुते तनुदाहं ६ ध्यान लयेन पुर= प ।

श दो
गी-

त पवत मनपम परिणामं । मदत दहन मिव दह
ति सदाहं ३ दिशि दिशि किरति सजल कण जाल
॥ नयन नलिन मिव विगलित नाले ४ नयन विष
य मिव किशलयतलं । कलयति विहित ज्ञताश
नकल्पे ५ त्यजति पाणि तलेन कपोलं । बाल
शशिन मिव सायमलोले ६ हरिरिति हरि रिति

वरुन ज्वाला कलापायते । सापि त्वद्विरहेण हन्त
हरिणी नृपायते हाकथे । केदर्योपि यमायते विर
चयन् शार्दूल विक्रीडिते अष्टपदी ॥ स्तनविनि १
नि हितमपि हारमुदारं सामनते कृशतनु रिवभा
रं रायिका विरहे तव केशव । शरसम स्तणमपिम
लयजपेकं पश्यति विषमिव वपुषि सशोकं १ असि

रा. टी. गी. स्यते ताम्यति ध्यायतुङ्गमति प्रमीलति पतस्य
ति मूर्च्छत्यपि एतावत्पतन ज्वरेवरतनजीवेन्नकिं
तेरसात्त्वर्वेद्य प्रतिमप्रसीदसि ततस्त्यक्तीन्यथा ह
स्तकः १६ कंदर्पज्वरसंज्वरा तरतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं । चेतश्चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंतासंताप
ति । किंतुत्तांति रसेन शीतलतरंत्वामेक मेवप्रियं

जपति सकामं । विरह विहित मरणी वनिकामे ७
श्रीजय देव भणितं मिति गीतं । सुखयत्त केश
व पद मय नीतं ६ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ सरत्तरं
दैवत वैद्य रुच्य त्वदंग संगे मृतमात्र साधुः । वि
मुक्त बाधां कुरुषेन् राधा मयेंद्र वच्चा दपि दारु
णोसि १५ सारीमो वति सीत्करोति विलपत्यत्क

रा. दो. स्वच्छंद व्रजसंदरी जनमन लोक प्रदोषश्चिरं। कंस
यी. यंसन धूमकेतुखतत्वादेवकीनंदनः २५ अथता
गंतमशक्रो विरमनरक्रो लतागदहेदृष्टा। तच्चिरि
नेगीविदेमनसिज संदेसावी प्राह ३. संगेष्वाभरणं
करोति वज्रशः पत्रेपिसंचारिणि। प्राप्तेत्वाभ्यरिणो
कते वितनते शय्याचिरंथायति। इत्याकल्य वि

ध्यायेन्ती रङ्गसिस्थिता कथमपि क्षीणान्तर्ग प्रणिनि
२० क्षण मपि विरहः पुराण मेहे नयन निमीलि
तखिन्नया नयाने । अस्मिन् कथमसौ रसालशाखा
विर विरहेण विलोक्य पुष्पिताम् २८ राधाम
रथ मारारवि मधुपसैलोक्य मौलस्यली नेय ।
तयो विन्ननीलरत्नमवनी भारा वतारंतकः ॥

श-दो
गी-

तदथर मधुर मधुति पिबेत् १ नाथ हरिसीदतिरा
था वासगृहे । तदभि शरण रभसेन वल्लेती पतति
पदानि कियंति चलेती २ विद्वित विशद विष कि
शलय वलया । जीवति परमिह तवरति कलया
३ सुझर वल्लोकित मंरुन लीला । मधुरिषु रह
मिति भावन शीला ४ त्वरित मयैति न कथ ।

कल्प तल्प रचना संकल्प लीलाशत । व्याशक्तापि
विनात्वया वरतननेष्टा निशानेष्टानि ३१ विपुल पु
लकपालिः स्फूर्ति सौत्कार संतर्जित जटिमकाकु
व्याकुले व्याहरंती । तव कि तव विधाया मंदके
दर्पचिंता रमजल निधि मग्नध्यानलगा मृगाक्षी
३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यतिदिशि दिशि रहसि भवंते

राद्यो-
गी-

मी रुहे । आनर्यासिन दृष्टि गोचरमित-सानंद नंदा
स्यदम् । राधाया वचनं तदयम् मन्वानेदोतिकेगो
पतो । गोविंदस्य जयंति सायमतिथिः प्राशस्त्य गर्भा
गिरः ३३ अत्रान्तरेच कुटला कुल वर्त्तमाना संजा
त पातक उव स्फुटलां वनश्रीः । वंद्यावनीतरम ।
दीपय देसुजालैर्दिकसंदरी वदन चंदन विंडु रिं

मभिसारं । हरिरिति वदति साखी मन्त्रवारं ५ श्लिष्य
ति चंवति जलथर कल्यं । हरि रुपगत इति तिमि
र मन्त्रल्ये ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा । वि
लयति रोदति वासक सजा ७ श्रीजय देव वकवेरि
दसुदितं । रसिक जनननता मयि सुदितं ८ श्लो
क ॥ किंविश्राम्यसि कस भोगि भवने भोलीर भू

रादे
गी

जगत् प्राण विधाय साधने प्रयोमम प्राण ह्ये भवि
ष्यति ३७ वायो विधेहि मलया निलपेव वाण प्राणा
न गच्छाण न गच्छन्तया अयिषे । किंते कृतोत
भविषि त्वमया नरेण । रेगाति सिच मम शाम्यत
देहदाहः ३८ । अष्टादी । कथित समयेपि हरि
रह हनययौवने । मम विफल मिद ममल

३३४ प्रसरति शशायर विवे विरहित विलेवेवमा
यवे । विभ्रया विरचित विविध विलापेसा परिता
पंचकाशेचैः ३५ विरह पाण्डु मयारि मवावजय
तिरयनपि वेदनो विभ्रतीवत्तनोति मनोभवः
स्वहृदये हृदये मदन व्यथो ३६ मनो भवानेदनवे
दनातिल प्रसीदरे दतिण मेव वामनो ॥ क्षणो

रादे
गी

पिकासिनी मभिस्तः किंवा कलाकेलिभिर्वहोवेष
भिरन्य कारिणि वनाभ्यर्णी किञ्चुद्राम्यति कोतः क्लो
तः मना मना गपि पथि प्रस्थात्मे वात्तमः सेके
ती कृत मेज वेज ललता ऊजे पियन्नागतः ४-प्रथा
गतो मायवमेतरेण सखी मिये वीत्य विषादमूको
विशेक माना रमिते कयापि जनार्दने दृष्टव देतदा

जयदेव कवि भारती । वसन्त हृदि प्रवति रिव कोम
ल कलावती द । अष्टपदी । श्लोक । त्वाम प्राप म
यि स्वये वर परो लीरो दतीरो दरे । शंके सेद रि काल
कृत मपि वत्स फो मयानी पतिः । अन्ये एवं कथा
भिरप्य मनसो विक्षिप्य वत्सो वले । राधायास्तन
कोर को परि मिलने शो हरिः पातवः । तत्किं काम

रादे
गी

रित रशान जचन गति लोला ४ दायित विलोकितल
जित हसिता । वद्ध विथ कूजित रतिरस रसिता ५
विषल पुलक पृथुवे पृथुभंगा । ससित निमीलि
न विक सदनेगा ६ अमजल कणाभर सभगशरी
रा । परिपति तोरसि रतिराथीरा ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरसितम् । कलिकलषे जनयत परिषा

३४१ अष्टपदी । सार समरोचन विरचितवेषा गलि
त कसमदर विललितकेशा १ कापि मधुरिप्रणा
विल सति सुवति शयिक प्रणा । हरि परिभण व
लित विकाश । कुच कलशो परि तरलित हारा २
विचल दल कललिता नन चेद्रा । नदथर पानरभ
सकत तेद्रा ३ चेचल केडल ललित कपोला । सख

रा-दे-
गी

चने ऊच शुभ गगने मृगा मद रुचि रूषिते । मणीस
रुममले नारक पटले नावपद शशि भूषिते ३ जित
विम शकले मृदु भज शुभले करतल नलिनीदले-
मर्कत वलय मधुकर निचये वितरति हिम शीत
ले धरति गृह जचने विपल पचने मनसि ज कनका
सने । मणीमय दशने नोरगा हसने विकरति

मिने द अष्टपदी । सोरहा ॥ समदित मदने रमणी
वदने छेवन चलितार्थरे । मगमद तिलके लिख
नि सपलके मगमिद रजनीकरे । रसने यमनाप
लिन वने विजय मगारि स्थना । चनचय रुचिरे र
चयति चिकरे तरलित तरुणानने ऊरुवक ऊरु
मेवला सावमेरति पति मगकानने २ चटयति स

रादे-
गी-

इति कविन्यपजयदेवके द। अष्टपदी॥ अनिल
नयन ऊदलय नयनेन । तपति नसा किसलय
शयनेन १ सखिया समिता वनमालिका । विक
सित सरसिज ललित सखिन । स्फटति न सामन
सिज विशिखिन २ अमृत मधुरतर मृदु वचनेन ।
ज्वलति न सामलयज पवनेन ३ स्थलजल रुह

कृतवासने ५ चरण किमलये कमल निलयेन ।
द्विमणियाणं पूजिते । वहिरप्यवरणे यावकभरणे
जनयति हृदयो जिते ६ रमयति स्वरशेका मणि
स्वरशे खल हलथर सोदरे । किमफल मवसे चि
रमिह विरसम्बद सखि विटपोदरे ७ इह सभगा
ने मधुरिष पदसेवके । कलि प्रयाचिरिते नवसत

श-दे
गी-

इति वशिष्ठस्य मनेन द अष्टपदी । श्लोक ॥ नाया
तः सावि निर्देयो यदि शतस्त्रहति किं हयसे ॥
सच्छेदे वद्ध वलभः सवसने किं तत्र ते हयसो ॥ य
श्याय प्रिय सेगमाय दयितव्या कृष्णमागोयसो ।
रुक्मिणी भगवति वसुदेवि देवेतः स्वयेयास्यति
निभत्त निजेन गदहे गतया विशिरहसिनिनीय

४२

२९ २५

रुचिकरचरणेन । लहति न साहिसकर किरणेन
४ सजल जलद समदय रुचिरेण । दहति न साह
दि विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वव
नेन । असितित सा परिजन हसितेन ६ सकलभु
वन जनवर नरुणेन । बहति न सा रुज मतिकरु
णेन ७ श्रीजयदेव भणित वचनेन । अविशत

रा-दे-
गी-

याने कृतपरिरेभाण चैवनया परिभ्य कृताथरणे
इ अलसनिमीलितलोचनया अलकावलेललितक
पोले। अमजलशकलकलेवर यावर मदन मद्यद
निलोले। कोकिलकलखकृजितया जितमन सि
जतेच विचारे। अथ कसमा कल केतलया नखलि
खित चनलनभारम् ५॥ चरण रणिन मणि

वसन्ते । चकित विलोकित सकल दिशारति रभस व
शेन हसन्ते १ सखिहे केशि मदन मदारे । रमयमया
सर मदन मनोरथ आवितया सविकारे । प्रथम स
मायाम लजितया पटचादृशते रत्नकुले । एतु मय
रसित आवितया शिथिली कृत जवन उकुले २
किसलय शयन निवे शितया विर मरसिममै वश

रादे
गी

सलीले । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ वृष्टि व्याकुल गोज
ला वनवशा उहृत् गोवर्द्धने । विश्रुतवसेदरी
भिराधिका नदाचिरेवैवित्तः । दर्पणैव तदर्पिताथर
तदी सिंह मद्रो कितो । वाङ्मोपतनोस्तनोत्तभव
तः श्रेयोसिकेसहिषः ४३ अथ कथमपियामिनी वि
नीयस्मर शरज्जरिनापिसा प्रभाते । अनुनयवच

नृपया परिष्कृतं सत विज्ञाने । सात्वविशेषत
मेव लया सकचग्रवेवन दानसुदं रति सात्व समय
वसाल सया दर मकलित वदन मरोजे । निस्सहति
पतित तव लतया मथसूदन मुदित मनोजे ० श्री
जयदेव भणित मिद मति शय मथ रिष्ट निधवन
शीले । सात्व मुक्ते दित राधिकया कथिते वितनोत्त

गङ्गा
गी

वन विरचित नीलमयूषे दशानवसन मरुणो नवह
स तनोति ननरुच रूपे २ वप्ररुच हरति नवसारसे
गगनरुच खरुचतरेखे । मरुक्तशकल कलित क
लयौतलिषेखरति जयलेखे ३ चरण कमलगल
दलक कसित मिदेतव हृदय मदारे । दर्शयतीव
वहि मर्दन डम नव किसलय परिवारे । दशनपदे

ने वदेते मये प्रणत मणि प्रिय माह साभ्यस्ये ४४
प्रष्टवती ॥ रजनि जनित गुरु जागर गग कषायित
मलसति मेघे । वहति नयन मन गग मिव स्फाट
मदित रसाभितिवेशे । याहि माथ वयाहि केशव
मावथ कैतव वादे । नामन सर सर सीरुह लोचन
यातव हरति विषादे । कजल मलिन विलोचन च

शदे
गी

सर्वत्रे ० श्रीजयदेव भगिन्नरतिवेचितवेदित सु
वति विलापे । शान्त सदा मधुरे विबुधा विबुधाल
यतोपि । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ नवेदे पश्यन्ताः प्र
सर दनरागवहिरिव । प्रिया पादालक दुरित
मरुणा योति हृदये । नमाय प्रत्यात प्रणय भ
रभगेन कितवन्तदालोकः शोका दपि किम

भवदथगतममजनयतिचेतसि विदे । कथयति
कथमथनापि मया सह नववपरेनदभेदे ५ वहि
रिवमलिव तरेतरेतव कस मनोपि भविष्यति नू
ने । कथमथ वेचयसे जन मनयतम सम शरच्चर
हने ६ भ्रमति भवान वला कवलाय वनेष किम
त्र विचित्रे प्रथयति एतनि कैववधू वय निर्दयवा

रादे
गी

रित्स्वाच । परि हरकृता नेक शंको नया सतते च
न स्तव जवनया क्रोते परानवकाशिति विशति
विततो रत्यो यत्यो नकोपि समोतरे प्रणयिनि प
वी रेभारेभे वियेहि वियेयतामद मग्ये वियेहिम
यि निर्देय देत देश दोर्वलि वेथनि विडस्तन पीड
नानि चेडित्तमेव मद मेवय पेचवाण चोडात्तको

पिलजो जनयति ४५ पद्मापयो थरतदी परिरम्भ
लग्नाशमीर मद्रितमरो मधुसूदनस्य । व्यक्तान्
राग मित खिलद नेराविद स्वदोबुद्ध मन परयत्
प्रियम् ४६ अशान्तरे मस्या रोष वशा मसी म
निः चासनिस्सह मांवी सभावी मपेत्प सबीड
मीलित मावी वदनेदिनाते सानेद गङ्गदपदे हरि

स-दे-
गी-

निशायस्त्रिगुणसुखे प्रयोयसुखस्थितः। अष्टपदी।
वदसि यदि किंचिदपि दत्तकृतिर्कोसदी हरतिद
वति मिदमति चोरम्। स्फुरदथरसीयवेतव वद
नचेदमाशेचयति लोचनचकोरे। प्रियेचारुशी
ले सेचयति मानमतिदाने। सपदिमदनानलोदह
ति मममानसंदेहिमात्रकमलमथपाने। सत्यमेवा

उदलना दसवः प्रयोत्त ॥ शशि सखितव भाति मे
गुरभयवजन मोह कराल कोल सखी तड दिति
भय भेजनाय सनात्तदथरसीध सखेव सिद्धिमेवः
व्यययति वृथा मोने तत्त्व प्रपेचय पेच मेन रुणि
मथरा लापे स्नापे विनोदय दृष्टिभिः समसखि
विमाली भावतान्ता वहि मेचन मेचमो स्वय म

श-दे-
गी

ति कोकनदशे। ऊसम शरवाणा भावेन यदि रेज
यसि कल सिदमेत दशशे ४ सुखत ऊच ऊभयो
ह परिमणि मेजरी रेजयत तव हृदय देशे। रसत
दसनापि तवचन जचन मेडले घोषयत मन्मथ
निदेशे ५ स्थल कमल गेज मे मम हृदय रेजने ज
जितरित रेग परभागे। भणमहणा कणि कद